अक्रम यूथ

नवम्बर २०१७ | हिन्दी
दादा भगवान परिवार
₹ २०

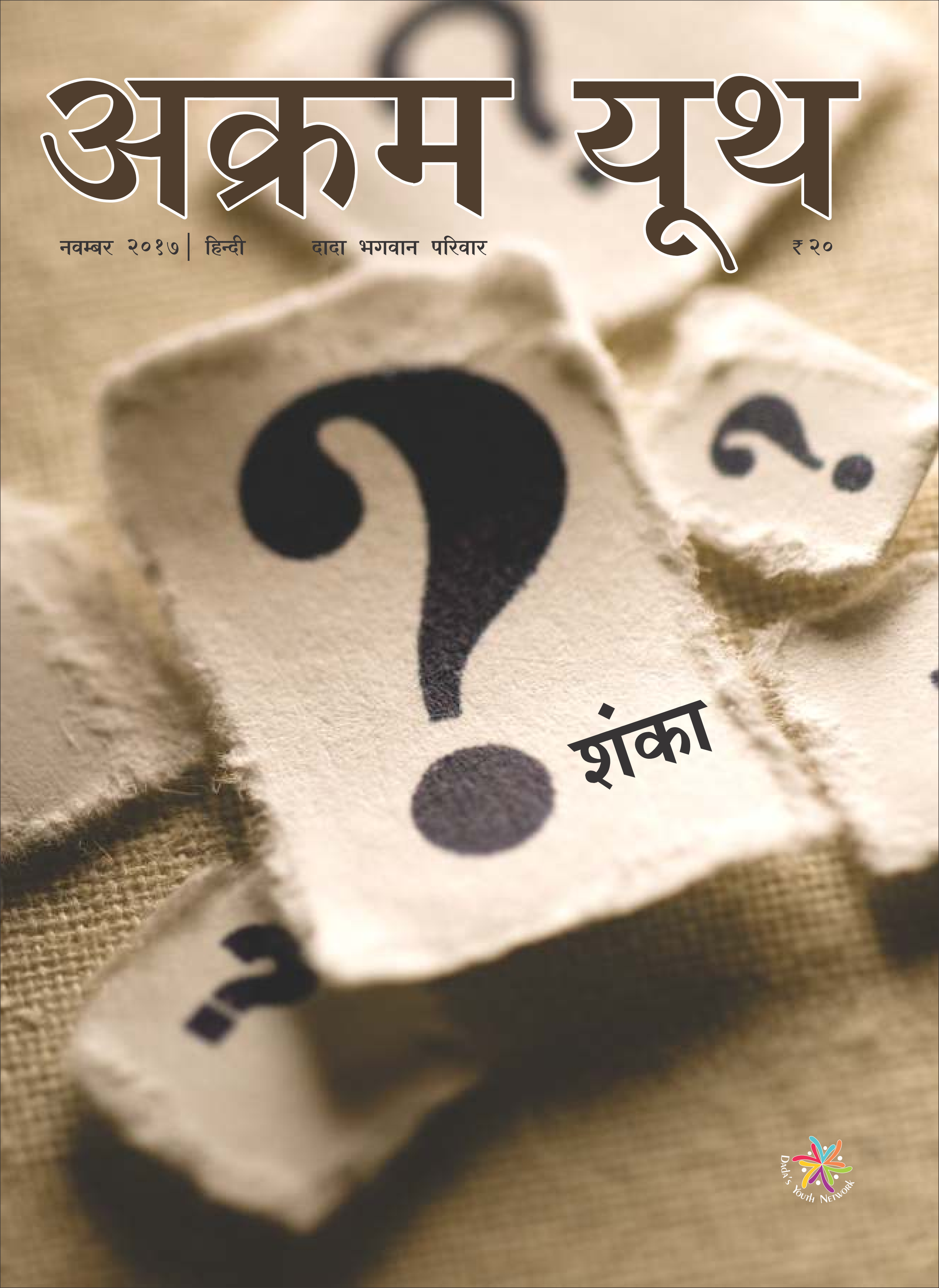

शंका

Dada's Youth Network

अनुक्रमणिका

४ सर्वे

६ ज्ञानी विद यूथ

८ कुंती और सूर्यदेव

१० शंका अंध बनाती है

१२ क्या यश और खुशी का अफेर चल रहा है?

१४ ज्ञानी की वैज्ञानिक दृष्टि

१५ अनुभव

१६ Activity

१८ The Experiment

१९ यह तो नई बात है

२० Maha Fusion

२३ Puzzles

You need to download QR Code Scanner App from Play store or iTunes Store

Visit : http://youth.dadabhagwan.org/Gallery/Akram-Youth

Download free ebook / PDF versions of all Akram Youth issues by scanning this QR code

संपादक : डिम्पल मेहता

वर्ष : ५, अंक : ०७

अखंड क्रमांक : ५५

नवम्बर २०१७

संपर्क सूत्र :
ज्ञानी की छाया में,
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला : गांधीनगर-३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००

email: akramyouth@dadabhagwan.org
website: youth.dadabhagwan.org

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421. Dist- Gandhinagar

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421. Dist- Gandhinagar

Printed at
Amba Offset
B-99, K6 Road, Electronics GIDC, Sector 25, Gandhinagar - 382044, Gujarat, India

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421. Dist- Gandhinagar

कुल २४ पेज कवर पेज सहित

सदस्यता शुल्क

वार्षिक
भारत : १२५ रुपए
यू.एस.ए. : १५ डॉलर
यू.के. : १० पाउन्ड

पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपए
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ४० पाउन्ड

D.D/M.O. महाविदेह फाउन्डेशन के नाम पर भेजें।

संपादकीय

हम सभी में एक चीज़ समान है कि, हम ज़रा सी बात में डरे रहते हैं और तनाव में आ जाते हैं। फिर अचानक हमारी समझ में आता है कि, इसके बारे में तो सोचने की भी ज़रूरत नहीं थी और इतनी तकलीफ की शुरुआत एक ज़रा सी बात पर हो जाती है - शंका। क्या मैं परीक्षा में पास हो जाऊँगा या मुझे नौकरी मिलेगी या मेरी बेटी का किसी के साथ लफड़ा होगा तो क्या होगा? वगैरह। क्या ऐसी कोई चीज़ है कि, जिसके बारे में हम शंका नहीं करते या जिससे हम नहीं डरते? इससे पता चलता है कि, हमें जिस मज़े में और आनंद में रहना चाहिए, उसे हम कितना पीछे छोड़ आए हैं। समस्या में घिरी हुई व्यक्ति के लक्षण ये हैं कि, उसे सभी चीज़ों के बारे में शंका उत्पन्न होती है और उससे डर लगता है।

दादाश्री कहते थे कि, "शंका और डर, कॉज़ (कारण) और इफेक्ट (असर) जैसे हैं। शंका के छोटे से बीज से पूरा जंगल बन जाता है। कभी अगर आपके (मन) में शंकाशील विचार आए और थोड़े समय के लिए आते रहें, तो वह सामने वाले व्यक्ति तक पहुँच जाते हैं और उसकी व्यापकता बढ़ती जाती है।" किसी भी व्यक्ति या चीज़ के बारे में शंका करने से पहले हमने ऐसा कभी नहीं सोचा था। इस अंक का विषय यही है कि, शंका न करना योग्य क्यों है और ऐसा नहीं करने के उपाय कौन से हैं! आशा है कि यह अंक आपके जीवन को और भी अच्छा और सुखमय बनाने में मदद करेगा!

-डिम्पल मेहता

आप शंका के बारे में क्या सोचते हैं?

ज्यादातर हम किस पर शंका करते हैं?

- माता-पिता या बच्चों पर।
- हमारी अपेक्षा के अनुसार न करें, उस पर।
- जिस पर विश्वास न हो, उस पर
- दोस्तों पर
- परिवार के सदस्यों पर
- करीबी व्यक्ति पर

२

किसी पर शंका करना अच्छी बात है क्या?

अगर "हाँ", तो क्यों?

अगर "नहीं", तो क्यों?

३

हाँ... जब आप अपना सबकुछ किसी को दे देते हैं और वह अच्छा सलूक न करें, तब वहाँ शंका करनी चाहिए कि, वह कहाँ गलत कर रहा है?

ना... आप शंका तभी करते हैं जब आपको सामने वाली व्यक्ति पर विश्वास नहीं है।

ना

शंका करने से अंदर ही अंदर उलझन होती है और वह व्यक्ति को नेगेटिव बनाता है।

ना

शंका करने का कोई मतलब नहीं है, क्योंकि सच्ची बात जान लें तो सभी के साथ अभेद रह सकेंगे और किसी के प्रति राग-द्वेष नहीं रहेंगे।

हाँ

शंका करना ज़रूरी है, तभी आप ज्यादा गहराई से जान सकेंगे।

ज्ञानी विद यूथ

प्रश्नकर्ता : *दादाश्री कहते हैं कि जो एक बार आए वह शंका है और दूसरी जगह ऐसी बात भी कहते हैं कि शंका* Endless *चीज़ है, तो ये दोनों कैसे?*

पूज्यश्री : शंका Endless यानी क्या कि शंका हुई, फिर उसका कोई सबूत नहीं मिलता, लेकिन अंदर से भोगवटा जाता ही नहीं, किसी को पति पर शंका आती है, किसी को पत्नी पर शंका आती है, बेटी पर आती है कि, इसने ऐसा किया है। बेटे पर भी शंका आती है कि, कुछ पीकर आता है, सिगारेट या शराब। शंका हुई कि, फिर पूरे दिन उसके पीछे... जैसे मक्खी गुड़ के पीछे घूमती रहती है, वैसे ही शंका के पीछे वृत्तियाँ घूमती ही रहती हैं कि, यह क्या कर रही होगी? वह क्या कर रहा होगा? ऐसा क्यों है? वैसा क्यों है? क्यों देर कर दी? किसके साथ बात कर रहा होगा? फोन में कुछ होगा? शंका हुई, तो क्यों? तो जहाँ अत्यंत मोह रहता है वहाँ ज़बरदस्त शंका आती है और फिर शंका का वह कीड़ा खुद को अंदर से खोखला कर देता है। रात में नींद नहीं आती, खाने में चैन नहीं लगता, संसार में शांति नहीं मिलती। यानी शंका को तोड़ देनी चाहिए। समझ-समझ कर तोड़ते रहना है, लेकिन एक ही दिन में नहीं होगा। कहते हैं कि शंका Endless है, वह २ साल तक चलती है, ३ साल तक भी चलती है। वह बंद ही नहीं होती। यानी वह बहुत बड़ा (भारी) रोग है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन ऐसा होता है कि कोई हमें सावध कर रहा हो कि यह व्यक्ति ठीक नहीं है और उसी व्यक्ति के साथ काम करना पड़े और अन्य लोगों ने भी कहा हो कि सावधान रहना, तो हमें शंका होने लगती है।

***पूज्यश्री :** वह तो छोटी सी शंका कहलाती है।*

***प्रश्नकर्ता :** लेकिन फिर जब-जब उसे देखें तब ऐसा ही लगता है कि "हाँ! ऐसा ही होगा"।*

***पूज्यश्री :** उसे अभिप्राय कहते हैं कि, "ऐसा ही होगा"। शंका तो अलग चीज़ है। शंका तो ज़िंदे मुर्दे की तरह रहती है। यह तो एक प्रकार का अभिप्राय है कि, "यह व्यक्ति झूठा है, हाथ का साफ नहीं है, इसके साथ सावधानी बरतनी होगी।"*

***प्रश्नकर्ता :** तो वास्तव में वह शंका है या नहीं?*

***पूज्यश्री :** यह तो सुनी हुई बात है, सबूत हैं क्या? अगर उस व्यक्ति के साथ काम करना पड़े तो अभिप्राय नहीं रखना चाहिए। जो हो सो ठीक, संभल कर रहेंगे। संभल कर यानी क्या? मान लो, कि नौकर पर शंका आती है कि, वह कोट की जेब से पैसे निकालता है, तो अलमारी में संभाल कर सब रख दो, गहने संभाल कर रख दो।*

***प्रश्नकर्ता :** तो वह शंका नहीं कहलाएगी?*

***पूज्यश्री :** नहीं, वह शंका नहीं है, व्यवहार है। संभाल कर रख दिया। शंका कब कहलाएगी, कि दूसरे दिन अगर वह घर में घूम रहा हो तो मन में लगेगा कि वह चोरी करेगा ही, उसे पूर्वग्रह कहते हैं। फिर किसी से कहें कि, ये नौकर तो चोर होते हैं, यह सब अभिप्राय कहलाते हैं।*

***प्रश्नकर्ता :** तो फिर जो छोटे प्रकार की शंकाएँ हैं उनकी छान-बीन करनी चाहिए, कि ये सही होंगी या नहीं?*

***पूज्यश्री :** पहले शंका तोड़ देनी है, अभिप्राय तोड़ देने हैं। क्या होगा, देखो तो सही। हर बार ऐसा ही होता है या नहीं। आप देखेंगे न, तो अभिप्राय हों कि अभी ऐसा ही करेगा! लेकिन वास्तव में ऐसा करता ही नहीं है। यानी हमारी मानी हुई शंका हमें ही दुःख देती है।*

***प्रश्नकर्ता :** उसके लिए एक ही हल है कि, हमें शंका रखनी ही नहीं चाहिए।*

***पूज्यश्री :** हाँ, **पाँच आज्ञा से निर्दोष दिखाई देना चाहिए और शुद्धात्मा दिखाई देना चाहिए तो हम शुद्ध हो गए कहलाएँगे, वर्ना हमारा रोग हमारा ही नुकसान करेगा।** उस व्यक्ति को कोई फर्क पड़ने वाला नहीं है, वह वैसा ही रहेगा और हम गुनहगार कहलाएँगे।*

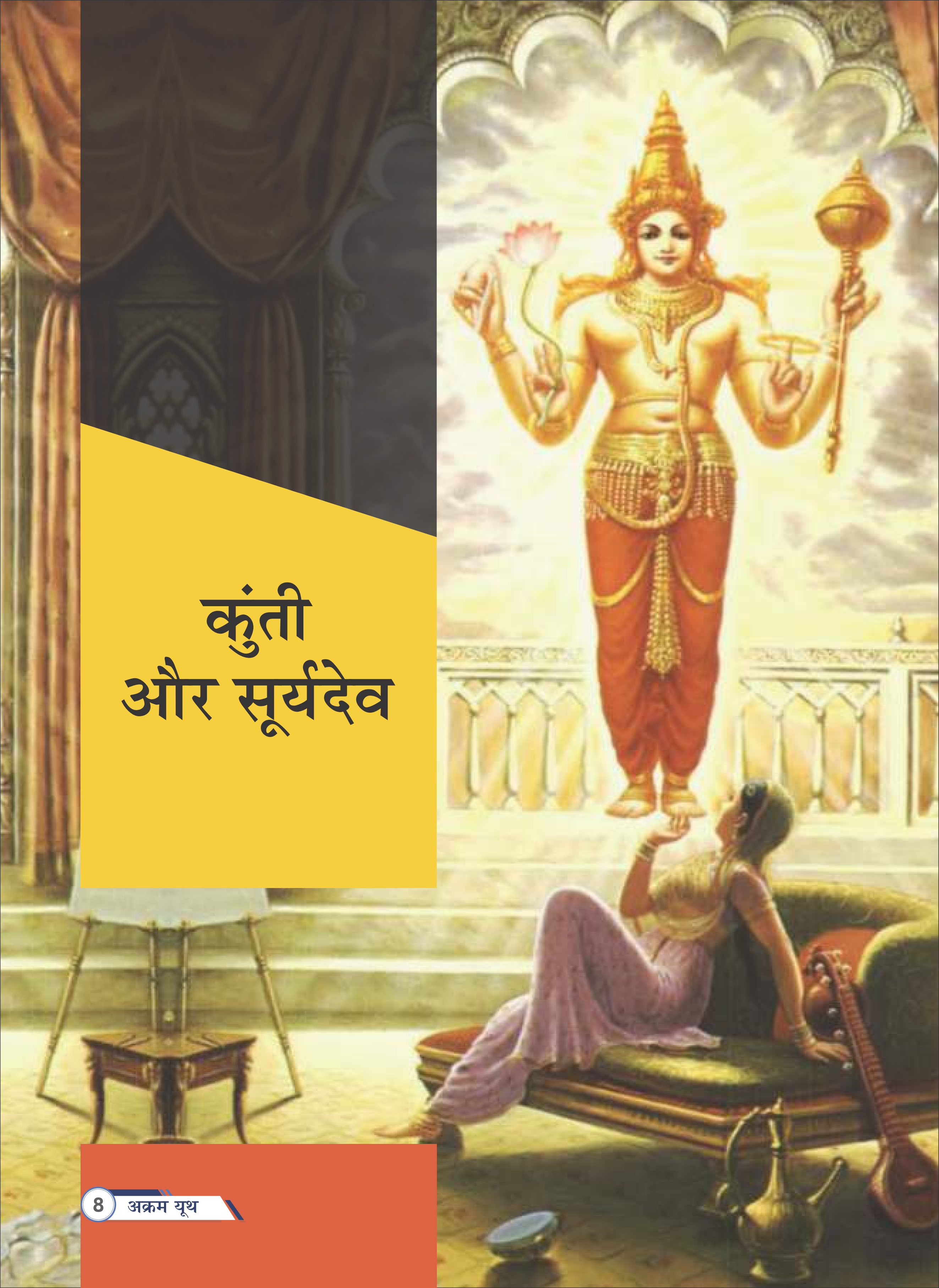

कुंती और सूर्यदेव

राजा कुंतीभोज की पुत्री कुंती यानी राजकुमारी कुंती। जंगल में फूल लेने जाती हैं। अपनी सहेलियों के साथ राजकुमारी जंगल में हँसते-खेलते घूम रही हैं, तब उन्हें एक आश्रम दिखाई देता है। ऋषि दुर्वासा का आश्रम। इन ऋषि को देखते ही, राजकुमारी को उनकी सेवा का भाव आता है, और आश्रम में रहकर ऋषि दुर्वासा की बहुत दिल से सेवा करती हैं।

एक राजकुमारी की इतनी सुंदर सेवा देखकर ऋषि बहुत प्रसन्न हो जाते हैं। वे सोचने लगते हैं कि, एक राजकुमारी जंगल में रहकर, सारे वैभव छोड़कर इस आश्रम में एक ऋषि की सेवा कर रही हैं। इनमें सर्वोच्च गुण हैं। ऐसा सोचकर ऋषि दुर्वासा राजकुमारी कुंती को वरदान देते हैं।

राजकुमारी कुंती, हम आपको वरदान देते हैं, "जब भी आप किसी देव का आवाह्न करके, उन्हें प्रकट होने के लिए कहेंगी, तब वे देव आपके समक्ष हाज़िर होंगे और आपको जो चाहिए वह देंगे।"

राजकुमारी बहुत खुश हुई और वापस महल में चली गई। लेकिन कुंती के मन में हमेशा ऐसी शंका रहती कि, "मैं जिस देव से प्रार्थना करूँ, वे सही में हाज़िर होंगे?" इस शंका के समाधान के लिए उन्होंने सोचा कि, मैं एक बार जाँच करके तो देखूँ कि यह वरदान सही है या गलत। ऐसा सोचकर कुंती सूर्यदेव से प्रार्थना करती है और सही में सूर्यदेव उसके समक्ष हाज़िर होते हैं और पूछते हैं, "कहिए राजकुमारी, आप क्या चाहती हैं?" कुंती कहती हैं, ***"मुनि दुर्वासा ने मुझे जो वरदान दिया है वह सही है या गलत, ऐसी शंका आने पर उसके समाधान के लिए मैंने आपसे प्रार्थना की।"***

यह सुनकर सूर्यदेव कहते हैं, "दुर्वासा मुनि द्वारा दिए गए वरदान के कारण, मुझे आपको कुछ तो देना पड़ेगा, इसलिए आप क्या चाहती हैं? माँगिए।"

कुंती कहती हैं, "क्षमा, सूर्यदेव। मैंने सिर्फ शंका के समाधान के लिए आपका आवाह्न किया, मुझे माफ कर दीजिए।" फिर भी सूर्यदेव कुंती को कुंडल और कवच वाला बालक (पुत्र) देकर जाते हैं और इस प्रकार कर्ण का जन्म होता है! फिर समाज के डर से कुंती उस बालक को नदी में बहा देती हैं। इस प्रकार, शंका का समाधान प्राप्त करने के लिए कुंती खुद उस बालक की गुनहगार है, ऐसा सोचकर दुःख में और खेद में पूरा जीवन व्यतीत करती हैं।

शंका अंध बनाती है

लक्ष्मीचंद महाराज, शेठ के घर गृहशांति पूजा करवाते हैं।
लक्ष्मीचंद, आपकी पूजा से संतुष्ट होकर यह बकरी भेंट दे रहा हूँ।
लक्ष्मीचंद खुश होकर बकरी को कंधे पर रखकर घर की ओर चल पड़ते हैं।
इस बकरी को पाल कर बड़ा करूँगा और इसका दूध बेचकर बहुत पैसे वाला बन जाऊँगा।
तीन ठग बात कर रहे हैं।
चलों, इस ब्राह्मण को लूटते हैं।
वैसे भी यह ब्राह्मण बुढ्ढ लग रहा है।

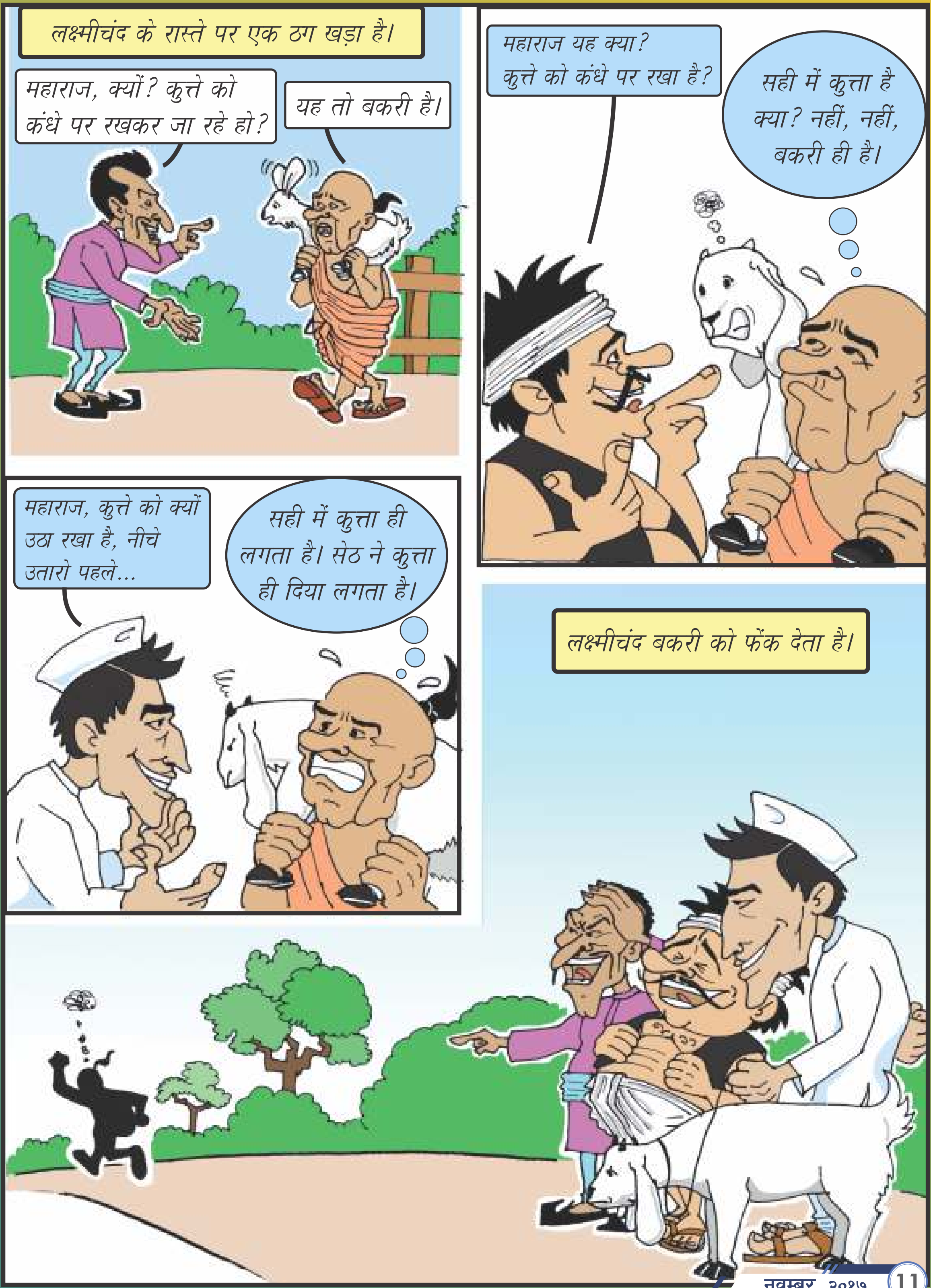

लक्ष्मीचंद के रास्ते पर एक ठग खड़ा है।
महाराज, क्यों? कुत्ते को कंधे पर रखकर जा रहे हो?
यह तो बकरी है।
महाराज यह क्या? कुत्ते को कंधे पर रखा है?
सही में कुत्ता है क्या? नहीं, नहीं, बकरी ही है।
महाराज, कुत्ते को क्यों उठा रखा है, नीचे उतारो पहले...
सही में कुत्ता ही लगता है। सेठ ने कुत्ता ही दिया लगता है।
लक्ष्मीचंद बकरी को फेंक देता है।

क्या यश और खुशी का अफेर चल रहा है?

निधि पूरे जोश के साथ गाड़ी चलाकर, खुशी और यश का पीछा करती है। लेकिन इस सूरत शहर का ट्रैफिक... निधि को वे दोनों गाड़ियाँ दिखनी बंद हो गई। लेकिन उसके चित्त में तो अभी, चल ही रहा है।

निधि ने अपनी गाड़ी को तो घर की ओर मोड़ लिया। लेकिन, उसका चित्त-मन सब खुशी और यश के पीछे ही है। वे दोनों कहाँ गए होंगे? मुझसे कहा भी नहीं कि कहाँ जा रहे हैं? शायद दोनों घूमने गए होंगे? हाँ, अब तो उन्हें मेरी दोस्ती कहाँ अच्छी लगती है? दोनों ऐसा ही सोचते होंगे कि मुझसे कैसे छुटकारा मिले। ऐसे अजीबो-गरीब विचारों के साथ उसने घर में प्रवेश किया।

"ओ...हो...मेरी बिटिया आ गई।" निधि की मम्मी प्रेम से उसे बुलाती हैं। लेकिन निधि कुछ भी जवाब दिए बिना अपने रूम में चली जाती है। लेकिन उसके विचारों का घमासान अभी चल ही रहा है। "ऐसा लगता है कि इन दोनों का कुछ चक्कर चल रहा है। वैसे भी जब से दोनों ने Annual Function में एक साथ नाटक किया है तभी से मुझे Ignore कर रहे हैं। अभी भी दोनों Garden में बैठकर बातें कर रहे होंगे!" तभी निधि की मम्मी उसके लिए खाना ले आती हैं, "चल बेटा, खाना खा ले, सुबह से घर से निकली है।" निधि खाते-खाते मम्मी से पूछती है, "मम्मी! कोई अपने साथ पहले बहुत प्रेम से रहता है, कई Promise देते हैं और फिर समय जाते अपने साथ गलत व्यवहार करने लगता है, ऐसा क्यों करते होंगे?"

मम्मी : तुम्हारे साथ ऐसा किसने किया, बेटा?
निधि : देखो न ये दोनों, खुशी और यश। जब से हम कॉलेज में मिले हैं, उस दिन से साथ ही हैं, तब तो उन्होंने कितने Promise *किए थे। हम तीनों हमेशा साथ में रहेंगे, एक-दूसरे से सब* Share *करेंगे। एक-दूसरे की हेल्प करेंगे और अब...*
"अब क्या?" निधि की मम्मी ने कुतूहलता से पूछा।
निधि : जाने दो न मम्मी, मैं खुद ही Handle *कर लूँगी। ठीक है तुझे जैसा सही लगे वैसा, कहकर निधि की मम्मी प्लेट लेकर चली गई। लेकिन यह क्या? निधि तो अभी भी वही विचारों में हैं। वे दोनों क्या करते होंगे? चलो, फोन से पूछकर देखूँ। नहीं, जाने दो उन लोगों के बीच में मुझे आने की क्या ज़रूरत है? पता नहीं, खुशी ने क्या जादू कर दिया है कि यश को मेरी फीलिंग समझ में ही नहीं आती। वैसे भी, मुझे पहले से ही उस पर शंका थी। उसे मैं कभी पसंद ही नहीं थी। ज़रूर उन दोनों का* Affair *स्टार्ट हो गया है, इसलिए ही मुझे किसी जगह साथ नहीं ले जाते।*

निधि तकिए पर सिर रखकर, ऐसे असंख्य विचारों के घमासान में फँस गई। चलो देखते हैं, इस विषय में दादाश्री क्या कहते है!

ज्ञानी की वैज्ञानिक दृष्टि

यानी शंका कहाँ होती है? कि दोनों का कोई अनुसंधान हो। उन दोनों में, अपने तय किए से कुछ भी इधर-उधर होता है तब शंका हो जाती है, कि यह क्या है!

दादाश्री : *जब आपको शंका होती है तब क्या करते हो?*

प्रश्नकर्ता : *पता लगाते हैं।*

दादाश्री : *पता लगाने से तो और ज्यादा शंका होती है। अब यह जो शंका है न, इस दुनिया में यदि किसी चीज़ को महत्व नहीं देना है तो वह शंका है! सभी दुःखों का मूल कारण यह शंका है। इसलिए हमसे कोई कहे कि, "शंका हो रही है" तो हम उन्हें सिखाते हैं कि, "शंका जड़ मूल में से उखाड़कर फेंक दो।"*

प्रश्नकर्ता : *शंका से क्या नुकसान होता है?*

दादाश्री : *शंका दुःख ही है न! प्रत्यक्ष दुःख! यह क्या कोई कम नुकसान कहा जाएगा? शंका बहुत बढ़ जाती है, तो मृत्यु के बराबर दुःख होता है। शंका होते ही सामने वाले के साथ जुदाई हो जाती है। शंका का असर सामने वाले पर हुए बिना नहीं रहता। शंका में दो नुकसान हैं : एक तो खुद को प्रत्यक्ष दुःख भुगतना पड़ता है, दूसरा सामने वाले को गुनहगार देखते हैं।*

प्रश्नकर्ता : *तो फिर इंसान में से शंका कैसे निकाली जा सकती है?*

दादाश्री : *कभी नहीं निकलती, इसलिए शंका होने ही नहीं देनी है तो बहुत हो गया।*

शंका पैदा होने से पहले ही मार देनी है।

शंका करने से तो उसे दो थप्पड़ मार देना ज्यादा अच्छा।

प्रश्नकर्ता : *सामने वाले पर शंका नहीं करनी फिर भी शंका हो जाती है, तो उसे कैसे दूर करें?*

दादाश्री : *वहाँ, फिर उसके शुद्धात्मा को देखकर क्षमा माँगनी है। उसका प्रतिक्रमण करना है। यह तो जो पहले भूलें की हैं उसकी शंका आती है।*

अनुभव

एक दिन मुझे अपने पति की जेब में से चिट्ठी मिली, जिसमें किसी लड़की का नाम लिखा था और कुछ शर्तें। उसे पढ़कर मैं स्तब्ध हो गई। क्या किया जाए कुछ समझ में नहीं आ रहा था। उस घटना के बाद शंकाएँ होने लगीं, उसके बारे में क्या बताऊँ! वे शंकाएँ २ साल तक चलीं। मेरे पति सब सही बता दें उसके लिए मैंने बहुत नाटक किए। मैं मर जाऊँगी और मरने की तैयारी भी कर ली। लेकिन तब मुझे ज्ञान हाज़िर हो गया कि “यह जल रही है, मैं नहीं। मैं शुद्धात्मा हूँ”। उन्होंने मुझसे सब सच कह दिया फिर भी उनके पीछे अपने बेटे को भेजती कि देखकर आ, कि Office ही गए हैं या और कहीं? और पूरे दिन निरंतर यही चलता। क्या करते होंगे? कहाँ होंगे? उसके घर तो नहीं गए होंगे? लाओ देखकर आऊँ, ऐसे भयंकर विचार आते, मैंने ज्ञान लिया हुआ था इसलिए जब-जब ऐसे विचार आते तब प्रतिक्रमण करती। फिर मैंने आप्तपुत्री बहन से बात की और उनके कहे अनुसार अपने पति और वह लड़की के प्रतिक्रमण करती, सामायिक करती और पाँच आज्ञा सेट करती। और अंत में पूज्यश्री से बात की। उन्होंने कहा, “आप्तवाणी-९ पढ़ना, उसमें दादा ने शंका के लिए बात की है।” लेकिन मुझे पढ़ना नहीं आता इसलिए आप्तवाणी-९ तो नहीं पढ़ी लेकिन पूज्यश्री का कहा हुआ एक वाक्य मुझे याद रह गया, “जिस व्यक्ति पर शंका करते हैं वह उसकी जीवित हिंसा के बराबर है।” और उसके बाद मुझे किसी पर भी शंका नहीं होती और यदि शंका होती है तो पूज्यश्री का वाक्य तुरंत याद आ जाता है। और तुरंत ही ज्ञान सेट हो जाता है। इस प्रकार ज्ञानी के वचनबल से मैं इस शंका में से छूट गई।

Activity

नीचे दिए गए किस्से में कौन से कषाय (मोह-भय-राग-द्वेष) के कारण शंका उत्पन्न होती है।

१ अजय भाई की बेटी फोन पर बात करके फोन सोफे पर छोड़कर चली जाती है और अजय भाई उसका फोन चेक करते हैं।

२ वर्षा बहन देखती हैं कि साँप उनके घर में जाता है, फिर साँप को बाहर निकलते नहीं देखा। तो क्या वर्षा बहन के घर में साँप है? अब क्या होगा?

३. बिटिया बड़ी हो गई है। बाहर अकेली जाती है, पता नहीं क्या करती होगी, उसके पिता को तो कोई चिंता ही नहीं है। करसन दादा अपनी पोती के लिए सोचते रहते हैं।

४ मम्मी, मैं आपसे कहती हूँ, "भैया रोज़ रात के ९:०० या ९:३० बजे आता है, बिगड़ गया है। अपने लफंगे जैसे दोस्तों के साथ यहाँ-वहाँ भटकता होगा। I Hope कि शराब-बराब नहीं पीता हो।" अवनी अपने भाई की बात मम्मी से करती है।

५ मिहिर को उसके Boss और Office की एक लड़की के बीच अफेर चल रहा है ऐसी शंका है और वह रोज़ उनकी बातें सभी से करता है।

६ विद्या ने उसकी सहेली मीरा को किसी लड़के के साथ बात करते देख लिया इसलिए वह मन में सोचती है कि, यह मीरा कब से लड़के के साथ बातें करने लग गई। ऐसी शंका विद्या को होती है।

७ हीर की निजी बातें उसकी सहेली तृषा को पता हैं और हीर को ऐसा लगता है कि तृषा मेरी मम्मी को तो नहीं बता देगी, ऐसी शंका हीर को तृषा पर रहती है।

८ रिया अपनी बहन को Mobile में chat करते देखती है, इसलिए रिया को अपनी बहन पर शंका होती है कि, वह किसी गलत रास्ते पर तो नहीं है न?

जवाब : १) मोह २) भय ३) मोह ४) राग ५) द्वेष ६) राग ७) भय ८) मोह

The Experiment

प्रयोग के लिए ज़रूरी सामग्री : आँख पर बाँधने वाली पट्टी, किताब, पानी की बोतल, चाबी, मोबाइल फोन, रूमाल, ग्लास, हेल्पर।

स्टेप १: सभी चीज़ों को क्रम से लगाओ।

स्टेप २: फिर सभी चीज़ों को क्रम के अनुसार याद रखो।

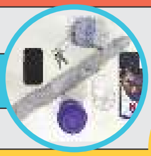

स्टेप ३: जो हेल्पर है वह खेलने वाले व्यक्ति की आँख पर पट्टी बाँधेगा।

स्टेप ४: अब हेल्पर लगी हुई चीज़ें अपने तरीके से अदल-बदल करेगा।

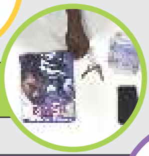

स्टेप ५: अब हेल्पर खेलने वाले व्यक्ति से एक चीज़ के लिए पूछेगा। उदाहरण के रूप में : चाबी??

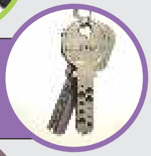

स्टेप ६: अब खेलने वाली व्यक्ति को यह बताना है कि चाबी कौन से क्रम पर है? उदा. पाँच

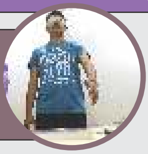

निरीक्षण :

आँख पर पट्टी बाँधने के बाद आपने ऐसा ही माना कि चाबी क्रम पाँच पर ही है।

निष्कर्ष :

ज्यादातर आपका अनुमान गलत पड़ा।

आध्यात्मिक निष्कर्ष :

जब आँख पर पट्टी नहीं थी तब जो देखा था, वह पट्टी लगाने के बाद भी ऐसा ही मान लिया कि, चाबी क्रम "पाँच" पर ही है। उसी प्रकार हमारे जीवन में भी कई चीज़ें आँख से एक बार देखकर मान लेते हैं कि, वह ऐसा ही है। लेकिन समय और संयोगों के साथ वे चीज़ें या व्यक्ति बदल सकते हैं। इसलिए शंका रखने जैसा नहीं है। इसीलिए तो दादाश्री कहते हैं, "देखने से ही यदि शंका हो जाती है तो नहीं देखा, ऐसा सोचकर करेक्ट कर दो न!"

यह तो नई बात है

शंका का मूल

जगत् में सभी अनर्थों का सब से बड़ा मूल है शंका। शंका उत्पन्न करने वाली बुद्धि है।

बला शंका की

वह भूत जैसी है, डायन जैसी है, शंका से तो डायन चिपकती तो अच्छा। उसे तो कोई उतार देता है लेकिन, शंका चिपकाने के बाद नहीं जाती।

शंका वह Poison

शंका इतना बड़ा Poison है कि, १ मिनट से ज्यादा लेने में आए तो आत्महत्या हो जाती है।

निःशंकता से शंका जाती है।

शंकाशील का कोई कार्य सिद्ध ही नहीं होता। निःशंकता को ही सिद्धि वरण करती है।

शंका से भयंकर रोग

यानी यह शंका तो टीबी का रोग है। शंका जिसे उत्पन्न हो गई, उसे टीबी की शुरुआत हो गई। इसलिए शंका किसी भी प्रकार से हेल्प नहीं करती।

बीज में से जंगल

कितने सारे पेड़ उग निकलते हैं! एक बीज और १७०० प्रकार की वनस्पति उग निकलती है!

महा Fuzion 2017

पिछले १० सालों में Fuzion भूल कर भी भूल सके ऐसा नहीं था। इस लंबे सफर की याद में इस साल महा Fuzion मनाया गया, जिसमें यूथ ने पुरानी और नई आनंद दायक अनुभवों की पलें दिल में रख ली थीं। इस बार महा Fuzion कुछ नया और अलग था। क्योंकि इस बार सभी यूथ ने रिस्पोन्सिबिलिटी के साथ विविध सेवाओं में भाग लिया था।

लाइव म्यूज़िकल शो

फेर प्रेज़न्टेशन

गेम

टेलेन्ट

टेलेन्ट

म्यूज़ियम

आप्तसंकुल टच

पूज्यश्री दर्शन

पूज्यश्री की सरप्राइज़ विज़िट

पूज्यश्री के साथ ग्रुप फोटो, फूड मेले का आयोजन किया गया, प्रक्षाल और आरती, पूज्यश्री सत्संग और दर्शन, आप्तसंकुल टच, गेम-एक्टिविटी

Puzzles

१ यदि ५ मशीन ५ मिनट में ५ पार्ट्स बनाती हैं, तो १०० मशीनों को १०० पार्ट्स बनाने में कितना समय लगेगा?

२ एक बेट और बॉल की कीमत १.१० है। बेट की कीमत बॉल की कीमत से १ डॉलर ज्यादा है। तो बॉल की कीमत क्या होगी?

३ ऑस्ट्रेलिया के एक किसान ने अमरूद का सुंदर पेड़ उगाया कि, जिससे वह अपने सभी फल पास के मॉल्स में बेच सके।

एक मॉल के मालिक ने किसान को फोन करके पूछा कि, वह कुल कितने अमरूद उसे बेचने के लिए दे सकता है?

दुर्भाग्य से किसान पेड़ के पास नहीं था, इसलिए उसे मन में ही गिनती करनी पड़ी कि कुल कितने अमरूद होंगे।

उसे पता था कि पेड़ के मुख्य तने की कुल २४ शाखाएँ थीं। और हर एक शाखा की १२ डालियाँ थीं और हर डाली की ६ छोटी डाली थीं। इस हर एक छोटी डाली पर एक-एक फल था, तो किसान कुल कितने संतरे मॉल के मालिक को बेच सकता है?

१) जवाब - प्रत्येक मशीन पार्ट्स बनाने में ५ मिनट लेती हैं। १०० में से हर मशीन अपने पार्ट्स ५ मिनट में खत्म करती हैं।

२) जवाब - बॉल की कीमत ५ सेन्ट होगी, १० सेन्ट नहीं। १० सेन्ट से १ डॉलर ज्यादा अर्थात् १.१०, १.१० + १० सेन्ट = १.२० होगा। ५ सेन्ट से १ डॉलर ज्यादा यानी १.०५ होगा। जिसका जोड़ होगा १.१०।

३) जवाब - एक भी नहीं! किसान ने संतरे के पेड़ उगाए ही नहीं थे। उसने अमरूद के पेड़ उगाए थे!!

नवम्बर २०१७
वर्ष : ५, अंक : ०७
अखंड क्रमांक : ५५

अक्रम यूथ

इस दुनिया में शंकाशील और मरा हुआ, दोनों एक जैसे ही हैं। जिस इंसान को सभी में शंका आती रहती है वह शंकाशील। शंकाशील और मरे हुए में फर्क नहीं है। वह मरा हुआ जीवन जीता है।

- दादाश्री

Send your suggestions and feedback at: akramyouth@dadabhagwan.org
Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner.
Printed at : Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-38014